गुणव्रत

जो अणुव्रतों को गुणाकार रुप से बढ़ाते हैं

दिग्व्रत

देशव्रत

अनर्थदण्ड त्यागव्रत

iKosh.org

दिग्व्रत किसे कहते हैं?

- पूर्वादि १० दिशाओं में
- प्रसिद्ध चिह्नों के द्वारा
- जीवन पर्यंत जाने - आने की मर्यादा करना

www.JainKosh.org

प्रसिद्ध चिह्न - जैसे

- समुद्र, नदी, पर्वत, वन, देश, योजन आदि

www.JainKosh.org

दिग्व्रत से क्या लाभ हैं?

- मर्यादा के बाहर
- सर्व पाप का त्याग होने से
- अणुव्रती उस क्षेत्र में
- महाव्रत जैसी अवस्था को प्राप्त होते हैं

www.JainKosh.org

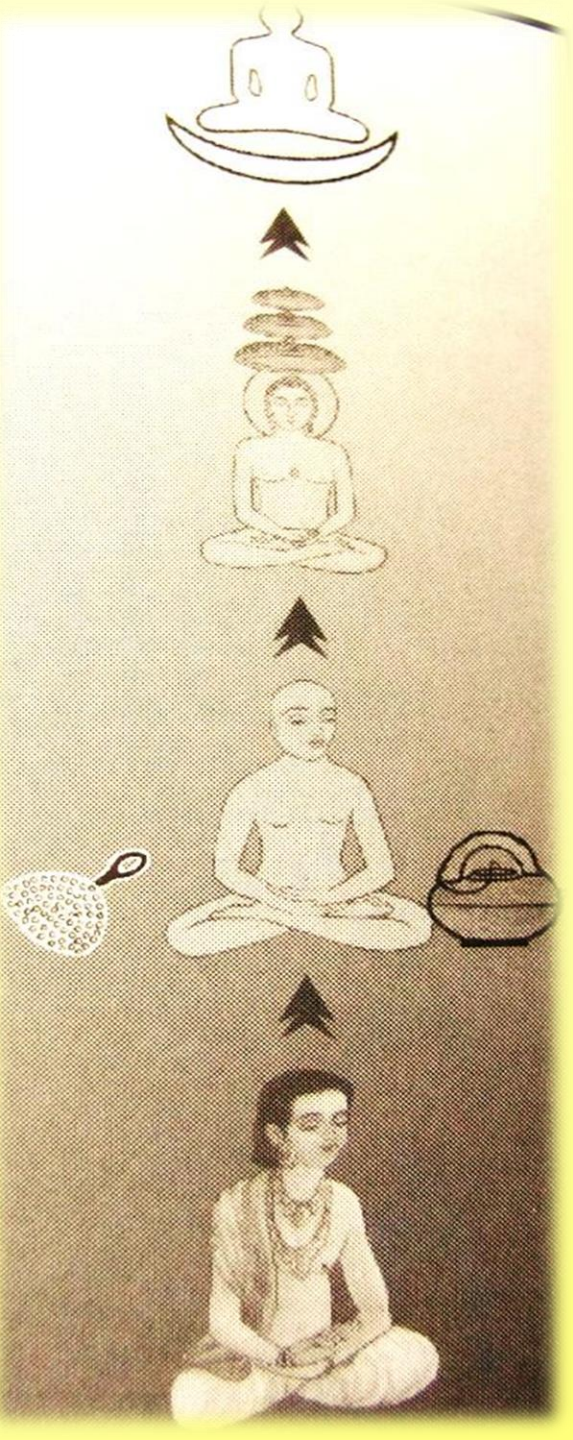

देशव्रत नामक गुणव्रत का लक्षण

www.JainKosh.org

ताहू में फिर ग्राम गली, गृह बाग बजारा ।
गमनागमन प्रमाण ठान अन, सकल निवारा ॥१२॥ (पूर्वार्द्ध)

»ताहू में= उसमें
»ग्राम= गाँव
»ग्रह= मकान
»बाग= उद्यान तथा
»बजारा= बाजार तक
»गमनागमन= जाने-आने का
»प्रमाण= माप
»ठान= रखकर
»सकल= सबका
»निवारा= त्याग करना

www.JainKosh.org

ताहू में फिर ग्राम गली, गृह बाग बजारा ।
गमनागमन प्रमाण ठान अन, सकल निवारा ॥१२॥ (पूर्वार्द्ध)

दिग्व्रत में जीवनपर्यन्त की गई जाने-आने के क्षेत्र की मर्यादा में भी

घड़ी, घण्टा, दिन, महीना आदि काल के नियम से

किसी प्रसिद्ध ग्राम, मार्ग, मकान तथा बाजार तक जाने-आने की मर्यादा करके

उससे आगे की सीमा में न जाना,

सो देशव्रत कहलाता है

www.JainKosh.org

देशव्रत किसे कहते हैं?

- दिन प्रतिदिन
- काल की मर्यादा करके
- दिग्व्रत में की गई विशाल सीमा को
- थोड़ा - थोड़ा घटाते जाना

www.JainKosh.org

दिग्व्रत और देशव्रत में अंतर

दिग्व्रत	देशव्रत
जीवन पर्यंत के लिये सीमा	कुछ समय के लिये दिग्व्रत की सीमा के और अंदर की
पूर्ण भव के लिये स्थाई	समय सीमा के बाद बदला जा सकता है
इसके आधार पर देशव्रत की सीमा होती हैं	इसके आधार पर दिग्व्रत की सीमा नहीं होती हैं

www.JainKosh.org

दिग्व्रत और देशव्रत में अंतर

दिग्व्रत	देशव्रत
सीमा अपने देश पर्यंत विस्तृत भी हो सकती हैं	अपने बैठने मात्र स्थान तक संकुचित हो सकती है
जीवन पर्यंत होने से विवेक जागृति अधिक चाहिये	कुछ काल के लिये होने से विशेष आकुलता का अवसर नहीं मिलता
सभी आचार्य गुणव्रत में गिनते हैं	किन्हीं ने शिक्षा व्रतों में गिना है

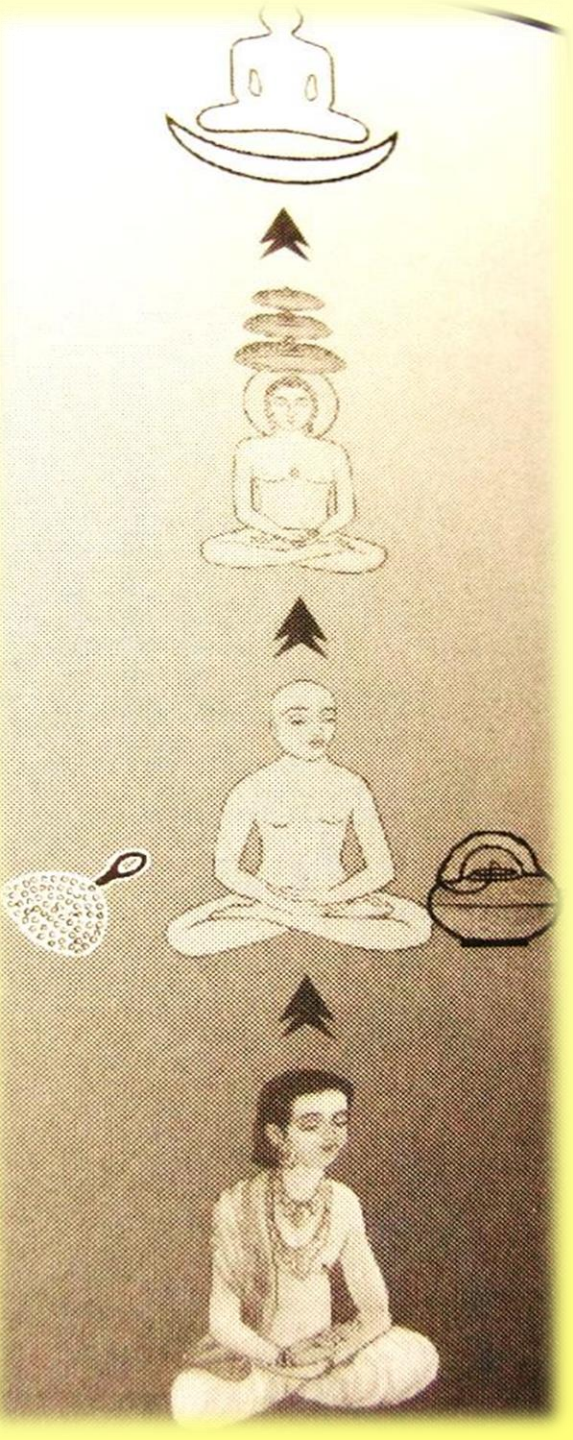

अनर्थदण्डत्यागव्रत के भेद और उनका लक्षण

www.JainKosh.org

काहू की धनहानि, किसी जय-हार न चिन्तै ।
देय न सो उपदेश, होय अघ वनज कृषी तैं ॥१२॥ (उत्तरार्द्ध)

- काहू की=किसी के
- धनहानि= धन के नाश का
- जय= विजय का
- हार= किसी की हार का
- न चिन्तै= विचार न करना
- वनज= व्यापार
- कृषि तैं= खेती से

www.JainKosh.org

कर प्रमाद जल भूमि वृक्ष पावक न विराधे ।
असि धनु हल हिंसोपकरण नहिं दे यश लाधे ॥
राग-द्वेष-करतार, कथा कबहूँ न सुनीजे ।
और हु अनरथ दंड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजे ॥१३ ॥

»प्रमाद कर= प्रमाद से
»जल= जलकायिक
»भूमि= पृथ्वीकायिक,
»वृक्ष= वनस्पतिकायिक,
»पावक= अग्निकायिक जीवों का
»न विराधे= घात न करना
»असि= तलवार,
»धनु= धनुष्य,
»हिंसोपकरण= हिंसा होने में कारणभूत पदार्थों को
»नहिं लाधे= न लेना

»राग-द्वेष-करतार= राग और द्वेष उत्पन्न करनेवाली
»कबहूँ= कभी भी
»न सुनीजे= नहीं सुनना
»और हु= तथा अन्य भी
»अनरथ दंड= अनर्थदंड हैं
»अघहेतु= पाप के कारण
»तिन्हैं= उन्हें भी
»न कीजे= नहीं करना चाहिए।

www.JainKosh.org

अनर्थदण्ड किसे कहते हैं?

- बिना प्रयोजन
- मन, वचन, काय की
- अशुभ प्रवृत्ति (चेष्टा)

www.JainKosh.org

अनर्थदण्ड के प्रकार

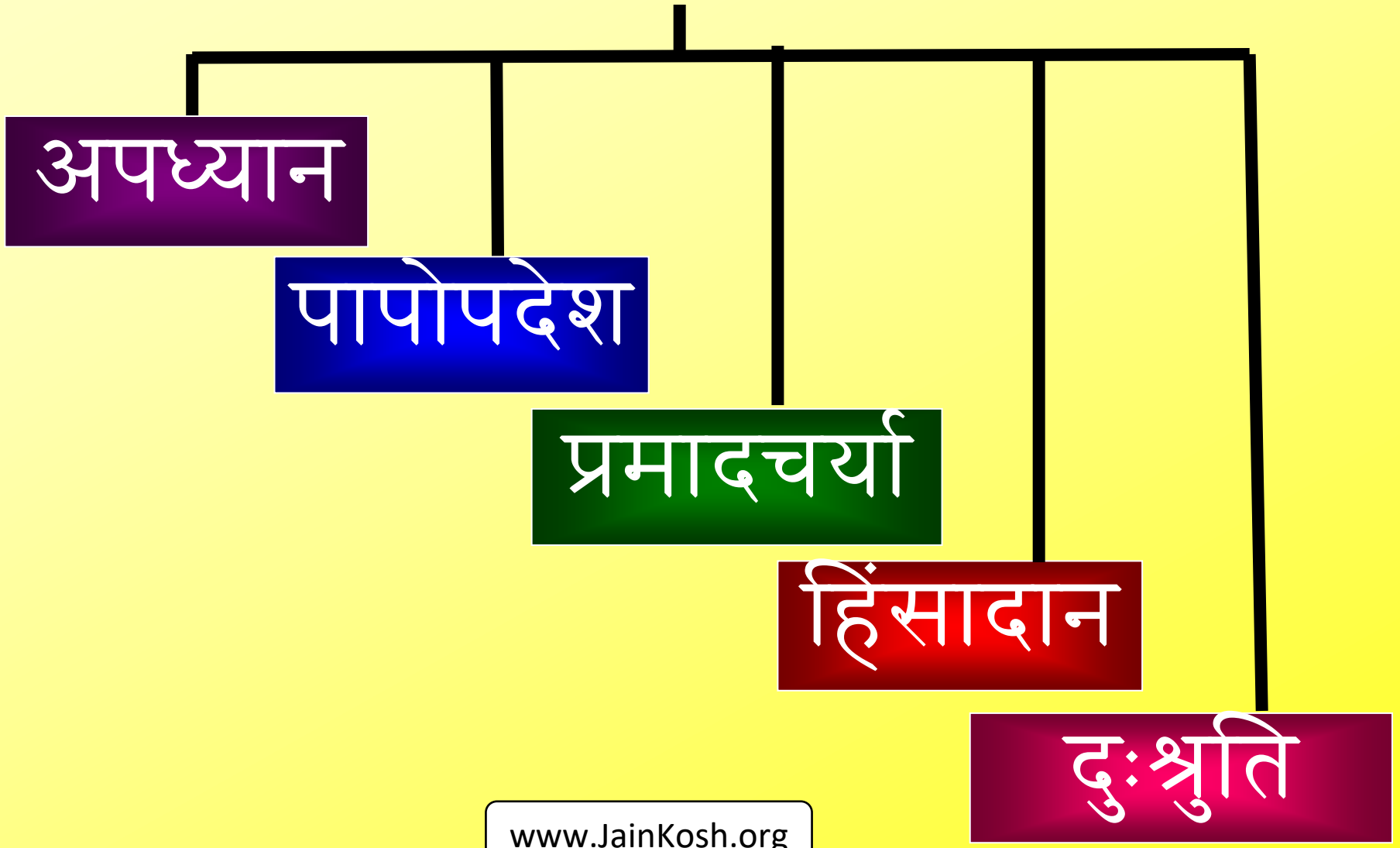

www.JainKosh.org

काहू की धनहानि, किसी जय-हार न चिन्तै ।

किसी के धन का नाश, पराजय अथवा विजय आदि का विचार न करना, सो पहला अपध्यान-अनर्थदंडत्यागव्रत कहलाता है ।

www.JainKosh.org

अपध्यान किसे कहते हैं?

- राग-द्वेष से
- अन्य के स्त्री-पुत्र आदि के
- वध-बंधन, हानि आदि का
- मन से खोटा विचार करना

❖जैसे- दूसरे की हार-जीत का

❖धन हानि का

❖पड़ोसी के बुरा करने का इत्यादि

www.JainKosh.org

अपध्यान के उदाहरण

- इसकी स्त्री-पुत्र मर जायें, दूर चले जाएं
- इसे दंड मिले, अपराध में फंस जाए
- इसके हाथ, नाक, कान आदि छेद दिये जाएं
- इसका धन लुट जाए, इसकी नौकरी-व्यापार बंद हो जाए
- इसकी इन्द्रियां नष्ट हो जाएं, यह बीमार हो जाए
- इसकी लोक में बदनामी हो जाए
- इसका दिमाग खराब हो जाए
- इसे देश-निकाला हो जाए
- यह परीक्षा में फैल हो जाए
- परायी स्त्री को ताकना, पराया धन चाहना
- दूसरों के दोषों को ग्रहण करना
- परायी कलह देखना

www.JainKosh.org

अपध्यान का त्याग क्यों करना?

- अन्य के दुखादि के चाहने से
  1. स्वयं को कुछ लाभ होता नहीं
  2. स्वयं को व्यर्थ में ही महापाप का बंध होता है
  3. अपने सोचने से दूसरे का बुरा होता नहीं. अन्य का बुरा-भला उसके स्वयं के पाप-पुण्य अनुसार होता है

- अतः अपध्यान का त्याग करना

www.JainKosh.org

देय न सो उपदेश, होय अघ वनज कृषी तैं ॥१२॥

हिंसारूप पापजनक व्यापार तथा खेती आदि का उपदेश न देना, वह पापोपदेश-अनर्थदंडत्यागव्रत है ।

www.JainKosh.org

पापोपदेश किसे कहते हैं?

- वचनों द्वारा पाप करने का कहना
- जैसे- पाप उत्पन्न करने वाले व्यापार, खेती का उपदेश देना

www.JainKosh.org

पाप में प्रेरणा का उपदेश = पापोपदेश

- तिर्यंच क्लेश उपदेश
- व्यापार का उपदेश
- हिंसा-आरम्भ का उपदेश
- छल-कपट करने का उपदेश

www.JainKosh.org

कर प्रमाद जल भूमि वृक्ष पावक न विराधे ।

प्रमाद चर्या

प्रमादवश होकर

पानी ढोलना,

जमीन खोदना,

वृक्ष काटना,

आग लगाना

इत्यादि का त्याग करना

अर्थात् पाँच स्थावरकाय के जीवों की हिंसा न करना,

उसे प्रमादचर्या-अनर्थडंदत्यागव्रत कहते हैं ।

हमें दुख किसमें ज्यादा?

1. • 1 कटोरी घी ढुलने में

2. • 1 घड़ा पानी ढुलने में

www.JainKosh.org

जल के दुरुपयोग पर ये क्रियायें करते हुये विचार करें:

- मंजन करते समय
- नहाते समय
- टंकी भरते समय
- हैंडपम्प से पानी भरते समय
- आँगन धोते समय
- कपड़े धोते समय
- मंदिर में पैर धोते समय
- बर्तन साफ करते समय
- नल में टोंटी नहीं लगाने से

www.JainKosh.org

अग्नि संबंधी अनर्थदण्ड को बचाने के लिये इन क्रियाओं पर ध्यान दें:

- बच्चों के खेल खिलोनों में
- मोबाइल आदि चार्जिंग के समय
- पानी गरम करते समय
- खाना बनाते समय
- टी वी चलाते समय
- मन्दिर, आफिस में
- पढ़ते समय

www.JainKosh.org

अनर्थक अग्नि से हानि

- हिंसा होती है
- आर्थिक व्यय बढ़ता है
- व्यर्थ में बिजली ईंधन आदि की खपत होती है

www.JainKosh.org

वायुकायिक संबंधी अनर्थदण्ड को बचाने के लिये इन क्रियाओं पर ध्यान दें:

- अंगोपांगों के संचलन में
- पेन पेंसिल होने पर
- खाली बैठे वस्तुयें बजाने लगना
- चलते चलते
- पंखा, AC, cooler आदि चलाते समय

www.JainKosh.org

वनस्पतिकायिक संबंधी अनर्थदण्ड को बचाने के लिये इन क्रियाओं पर ध्यान दें:

- रसोई में सब्जी बनाने में
- औषधि में
- सब्जी खरीदने में
- घर सजाने में
- Function आदि में
- बगीचे में पेड़ों को shape में कटवाने में

www.JainKosh.org

असि धनु हल हिंसोपकरण नहिं दे यश लाधे ॥

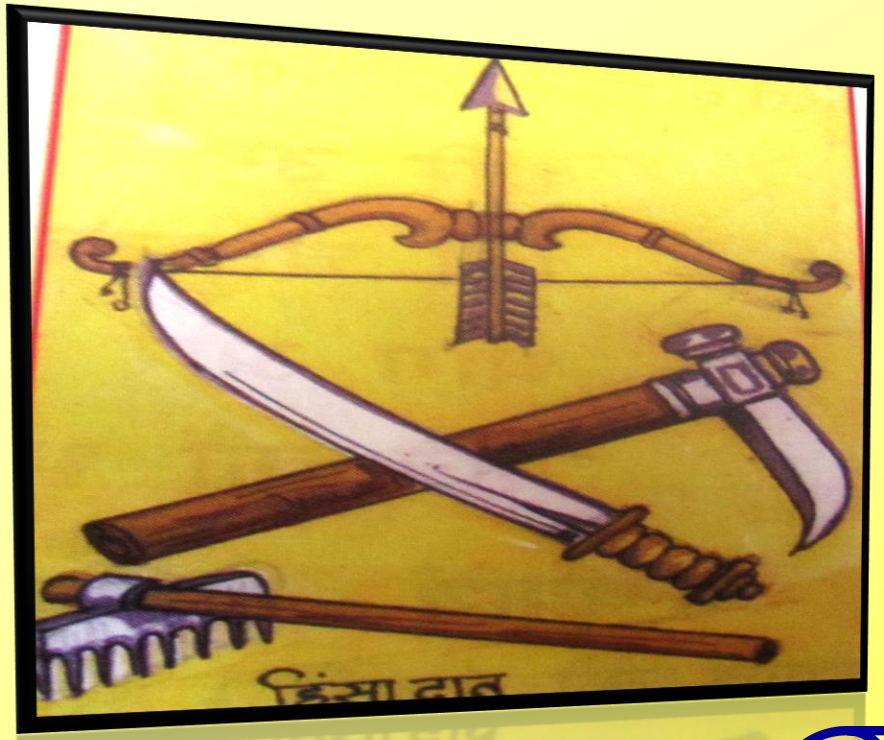

यश प्राप्ति के लिए, किसी के माँगने पर हिंसा के कारणभूत हथियार न देना, सो हिंसादान-अनर्थदंडत्यागव्रत कहलाता है ।

www.JainKosh.org

हिंसोपकरण क्या?

जो उपकरण स्वंय के तथा दूसरों के प्राणों का घात करने में निमित्त हो

www.JainKosh.org

हिंसोपकरण अनर्थदण्ड हम कैसे करते हैं?

हिंसोपकरणों का
संग्रह,
आदान
प्रदान

www.JainKosh.org

हिंसा दान कैसे करते हैं?

- निंद्य पापात्मक आजीविका करने वाले को ब्याज पर पैसा उधार देना
- हिंसक पशुओं को पालना
- बस, गाड़ी, बारुद, चूहा मारने की दवाई, गुड-नाइट आदि का व्यापार
- बीड़ी, सिगरेट पीने वालों को माचिस आदि देना
- जिन्हें हाथ में लेते ही घातक परिणाम आयें जैसे तलवार, छुरी, बन्दूक, बाण आदि देना

www.JainKosh.org

राग-द्वेष-करतार, कथा कबहूँ न सुनीजै ।
और हु अनरथ दंड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजै ॥१३ ॥

- राग-द्वेष उत्पन्न करनेवाली विकथा और उपन्यास या शृंगारिक कथाओं के श्रवण का त्याग करना, सो दुःश्रुति-अनर्थदंडव्रत कहलाता है

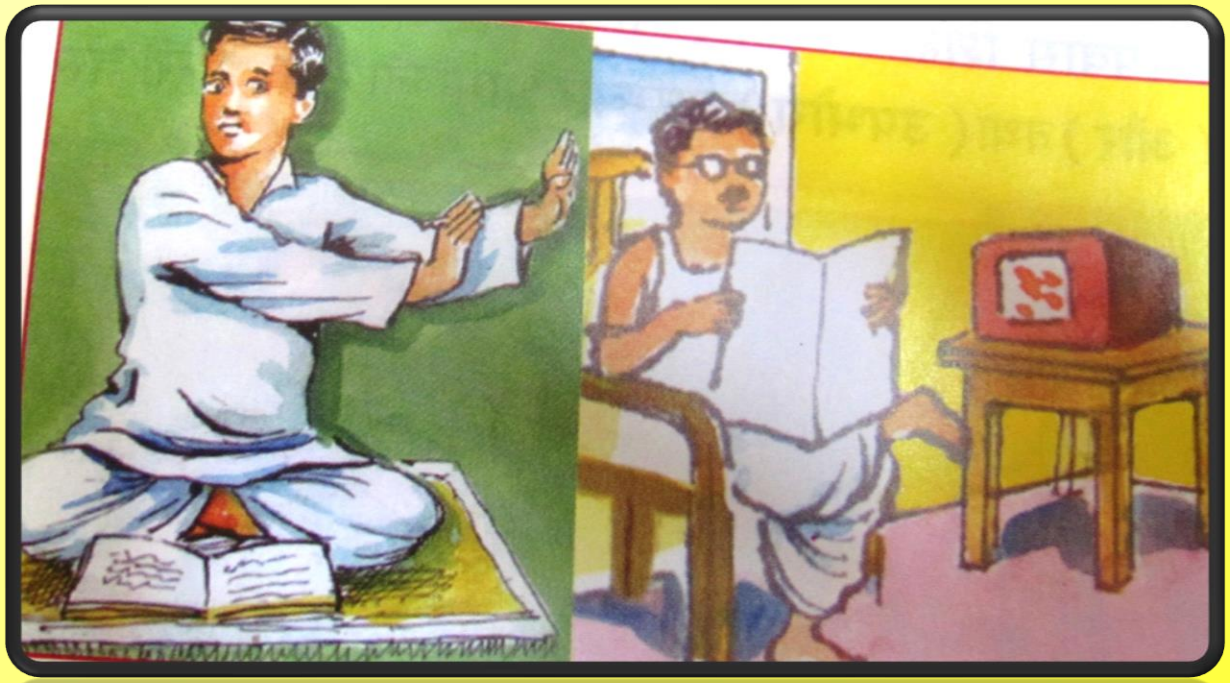

www.JainKosh.org

दुःश्रुति

www.JainKosh.org

दु:श्रुति नाम का अनर्थदण्ड

आरम्भ

परिग्रह

मिथ्यात्व

राग, द्वेष

अहंकार, ममकार और

काम के द्वारा

चित्त को कलुषित करने वाली

पुस्तकों-साहित्य को सुनना, पढ़ना

क्या सुनना, पढ़ना दु:श्रुति है?

- जिससे काम भोगादि की वासनायें जागृत हो
- पुत्र उत्पत्ति, स्त्री के भोग विषयक बातें
- सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, रसोई, शिल्प आदि की बातें
- सौंदर्य, शृंगार, वेश-भूषा, सजावट आदि की बातें
- मिथ्यात्व को पुष्ट करने वाली बातें

www.JainKosh.org

क्या हर प्रकार की पुस्तकें पढ़ना दु:श्रुति में आता है?

नहीं,
यदि हमारा अभिप्राय भोगों में लिप्त होने का नहीं है तो भोग संबंधी पुस्तकें पढ़ना दु:श्रुति में नहीं आता है

www.JainKosh.org

- Reference : तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरंड-श्रावकाचार

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889